टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

अगस्त 2023 वर्ष 27, अंक 08 ❑ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2080 ❑ कुल पृष्ठ 16

ई-मेल: tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये ❑ वार्षिक शुल्क 200 रुपये ❑ आजीवन 1000/-रूपये

स्वराज्य के अग्रदूतः स्वामी दयानन्द

❑ स्व. उमाकान्त उपाध्याय

भारतवर्ष में 19वीं शताब्दी नवजागरण का काल है। नवजागरण के आदि पुरुष राजा राममोहन राय थे। उन्होंने अपने मिशन की पूर्ति के लिए ब्रह्मसमाज की स्थापना की थी। राजा राममोहन राय अंग्रेजों के राज्य और अंग्रेजी भाषा को भारतवर्ष के लिए ईश्वर का वरदान मांगते थे। अतः राजा राममोहनराय समाज सुधार के कार्य में तो लगे किन्तु स्वराज्य का चिन्तन उनके लिए कुछ विशेष महत्व न रखता था। स्वामी दयानन्द का काल राजा राममोहन राय से लगभग 50 वर्ष पीछे है। स्वामी दयानन्द का जन्म 1824-25 में हुआ था और 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के वे प्रत्यक्षदर्शी थे। बहुत सारे इतिहासज्ञों का मत है कि स्वामी दयानन्द ने संन्यासी के रूप में उस समय प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया था। उनके ग्रन्थों में भी ऐसे अन्त:प्रमाण उपस्थित हैं जो उनके सक्रिय भाग लेने का समर्थन करते हैं।

1857 का स्वतन्त्रता संग्राम असफल हो चुका था। अंग्रेजों का प्रभुत्व सारे देश पर स्थापित हो चुका था। महारानी विक्टोरिया ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी से शासन ले लिया था और भारतवर्ष का शासन सीधे तौर पर बर्तानिया सरकार के हाथ में चला गया था। महारानी विक्टोरिया ने भारतवर्ष के लिए प्रसिद्ध घोषणापत्र प्रसारित कर दिया था जिसके अनुसार अंग्रेज सरकार भारतवर्ष की प्रजा के साथ पूर्ण न्याय करेगी, किसी के साथ धार्मिक दृष्टि से कोई पक्षपात नहीं होगा और अंग्रेज सरकार भारतवर्ष की सुख-सुविधा का ध्यान रखेगी। स्वामी दयानन्द ने अपने युग निर्माता क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में महारानी विक्टोरिया की इस घोषणा का सुस्पष्ट उत्तर दिया है-

अब अभाग्योदय से आर्यवर्त में आर्यों का अखण्ड स्वतन्त्र स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों को पादाक्रान्त हो रहा है। राज्य कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है, परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक्-पृथक् शिक्षा अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है।

जहां स्वामी दयानन्द ने अपने लेखों-व्याख्यानों में, प्रार्थना की पुस्तकों में, सर्वत्र सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र स्वराज्य के लिए प्रार्थना की है, वहीं ब्रह्मसमाज के नेताओं की अंग्रेजी राज्य के प्रति भक्ति प्रशंसा स्वामी दयानन्द के विचारों के अनुकूल नहीं थी और वे खुलकर इस सम्बन्ध में उनकी आलोचना करते थे। केशवचन्द्र सेन ब्राह्मसमाज के प्रसिद्ध नेता थे और वे ईसाइयों से और ईसाई सम्प्रदाय से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने अपना पूजा स्थान मन्दिर न बनाकर गिरिजाघर बनवाया था। स्वामी दयानन्द यह सब कुछ विदेशी

(शेष पृष्ठ 14 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विनम्रता

- पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी

प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, ट्रस्ट प्रधान महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा (जन्मभूमि)

किसी भी व्यक्ति को जीवन में सफल होने के लिए विनम्रता एक आवश्यक गुण है। उन्नति की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए हमें नीचे की ओर देखकर हर कदम संभाल कर रखना होता है तभी हम सफलतापूर्वक अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। यदि हम नीचे देखकर यथार्थ की कठोर भूमि के उँचें नीचे रास्तों पर संभल कर चलने के स्थान पर अहंकार के मद में डूब अकड़ कर चलेंगे तो निश्चित रूप से समय की ठोकर खाकर गिर पड़ेंगे। स्वाभिमान और आत्मविश्वास रखना भी अनिवार्य गुण है परन्तु स्वाभिमानी भी वही श्रेष्ठ है जो विनम्रता को प्रथम स्थान पर रखता है। वैसे भी विनम्रता दिखाकर हम महान व्यक्तियों के समकक्ष हो जाते हैं। जहां नम्रता से कार्य हो सकता हो वहां उग्रता व्यर्थ होती है।

ऋग्वेद में भी मनुष्यों को विनम्रतापूर्वक नीचे देखकर चलने का आदेश देते हुए कहा गया **अधः पश्यस्व मोपरि।** 8/33/19 विनम्रतापूर्वक नीचे देखने अर्थात अपने से नीचे अभावग्रस्त दु:खियों के कष्टों को देखकर हमें अपने कष्ट कम लगते हैं और हम स्वाभाविक रूप से ईश्वर का धन्यवाद करके प्रार्थना करते हैं कि हे ईश्वर! आपने हमें इन कष्टों से बचा रखा है और इसके विपरीत यदि हम अपने से उपर अर्थात् भौतिक रूप से अधिक सम्पन्न सुख सुविधाओं वाले लोगों को देखते हैं तो हमारे मन में स्वयं के छोटा होने की कुंठा का भाव हो जाता है और अपनी स्थिति के प्रति असंतोष के भाव से ग्रस्त हम उन सुख सुविधाओं के अर्जन के लिए पाप रूपी कर्म करने लगते हैं और अंतत: ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में उन पाप कर्मों के फल में दंड अर्थात दु:ख और कष्ट पाते हैं।

विनम्रता का अर्थ कमजोरी कदापि नहीं है अपितु विनम्रता में एक स्वाभाविक लचीलापन होता है परन्तु उस लचीलेपन में तनने की शक्ति है, जीतने की कला है और शौर्य की पराकाष्ठा है। जिसमें विनम्रता नहीं वह विद्वान नहीं हो सकता। विनम्रता के गुण से महान व्यक्ति की पहचान होती है। जैसे एक फलों से लदा हुआ वृक्ष स्वाभाविक रूप से झुक जाता है और एक सूखा हुआ ठूँठ अकड़ कर तन कर खड़ा रहता है। परन्तु आंधी के सामने यह ठूँठ टूट कर गिर पड़ते हैं।

अकड़ू यूं तन कर खड़ा,
लगे ठूँठ सा खूब।
आंधी में औंधा पड़ा,
बची रही लघु दूब ॥

किसी विद्वान् संत से उनके शिष्य ने प्रश्न किया ''महाराज आप नीचे भूमि पर ही क्यों बैठते और अपना आसन लगाते हैं?'' उस संत का उत्तर हम सभी के लिए अनुकरणीय और विनम्रता की पराकाष्ठा को लिए हुए था **''नीचे बैठने से गिरने की कोई संभावना नहीं रहती।''** विनम्रता के कारण आया लचीलापन दर्शाता है कि उस व्यक्ति में जान है जबकि अकड़कर तन जाना तो बस मुर्दे की पहचान है। किसी विद्वान ने विनम्रता को परिभाषित करते हुए बड़े सटीक सुन्दर शब्दों में कहा ''अत्याधिक प्रतिकूल परिस्थितियों में भी पूरी तरह समायोजित होने की क्षमता पैदा कर लेना ही विनम्रता है इसीलिए विनम्र व्यक्ति कभी भी नहीं टूटता।

जग में करनी अजब यह, जानत है सब कोय।
जो जितना नीचे झुके, उतना उँचा होय॥

धन पद ज्ञान या अन्य किसी गुण के कारण यदि मनुष्य विनम्रता छोड़कर उसके मद में मदमस्त होकर अहंकारी हो जाता है तो उसका विनाश अवश्यंभावी है। अहंकार एक ऐसा दीमक है जो अंदर ही अंदर खोखला करते हुए सबसे पहले उस गुण को खा जाता है जिसके कारण वह उत्पन्न हुआ है। इसीलिए विनम्रता को शरीर की अन्तरात्मा सभी गुणों की आधार शिला और सर्वोत्तम गुण कहा गया। विनम्रता विद्या ज्ञान का प्रतिफल और सुख का आधार है इसलिए जीवन में सुखी रहने के लिए हमें विनम्र होना चाहिए।

-पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी के साथ अनऔचपारिक बैठक में चर्चा के कुछ अंश

महर्षि दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय टंकारा

हेतु हरियाणा बोर्ड के पाठ्यक्रम के अनुसार 10वीं कक्षा तक साईंस एवं गणित के अध्यापकों की आवश्यकता सेवानिवृत अध्यापकों को प्राथमिकता दी जायेगी।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें- **आचार्य रामदेव, मो. 9913251448**

'हंसते रहो'

जो सदा काम करने का पाठ सबको पढ़ाता, जो कभी रोना ना जाने, पर रोतों को हंसा दे, जो अनेक संकटो में भी रहे हंसता और हंसाता 'आर्य' वही कहलाता

कुछ समय पहले वैज्ञानिकों ने कुछ खिलाड़ियों की हंसी के आधार पर उनकी रैंकिंग की। उनमें से कुछ खिलाड़ी ऐसे थे जो खूब हंसते थे और जी खोल कर हंसते थे। दूसरे कुछ ऐसे थे जो कभी-कभार हंसते थे। लेकिन कुछ खिलाड़ी ऐसे भी थे, जो बिल्कुल ही नहीं हंसते थे। उनकी जीवन अवधि का अध्ययन करने पर चौंका देने वाले तथ्य सामने आए। जो खिलाड़ी बिलकुल नहीं हंसते थे, उनकी औसत आयु 72.9 वर्ष रही, जबकि जो खिलाड़ी खूब हंसते थे, उनकी औसत आयु 79.9 वर्ष पाई गई। कम हंसने वाले खिलाड़ियों की औसत आयु इन दोनों के बीच की अर्थात् 75 वर्ष के लगभग रही।

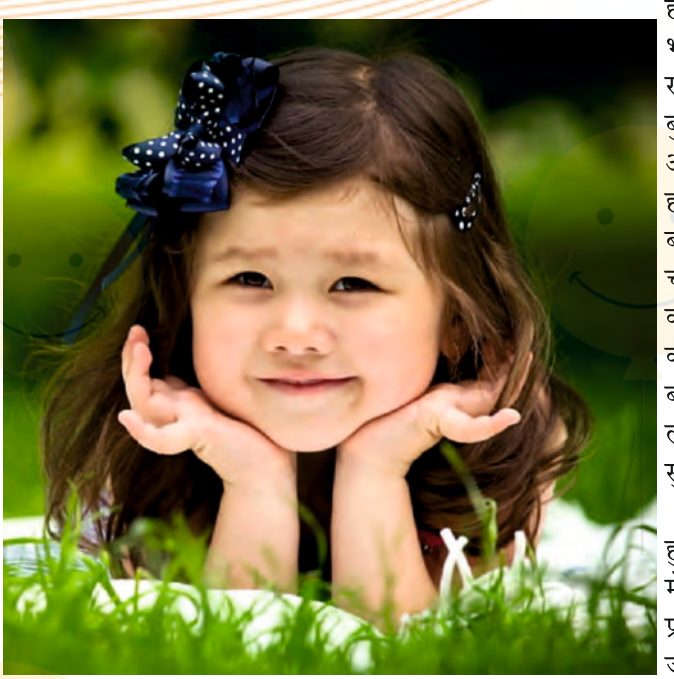

हम जितना हँसेंगे, जितना खुशदिल रहेंगे, उतनी ही लंबी उम्र पा सकेंगे और वो भी अच्छे स्वास्थ्य के साथ एक विदेशी विद्वान के अनुसार व्यक्ति का हंसमुख स्वभाव दीर्घायु होने का सर्वोत्तम साधन है। आधुनिक वैज्ञानिक शोध इस बात की पुष्टि करते हैं। हंसी से न केवल रोग-मुक्ति तथा अच्छे स्वास्थ्य की प्राप्ति संभव है, बल्कि अधिक हंसने वाले अपेक्षाकृत दीर्घायु भी होते हैं। हंसना एक संपूर्ण व्यायाम है, जिससे शरीर की सभी नाड़ियां खुलती है। खुलकर हंसने से फेफड़ों, गले और मुंह की अच्छी कसरत हो जाती है। पेट एवं छाती के स्नायु मजबूत होते हैं, डायफ्राम मजबूत होता है और रक्त संचार तेज होता है, जिससे खून में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है।

इसीलिए जो जितना अधिक हंसता-हंसाता है, उसका चेहरा उतना ही अधिक चमकता है, शरीर में जितनी अधिकमात्रा में ऑक्सीजन का अवशोषण होता है, उतनी ही अधिक ऊर्जा उत्पन्न होती है और जितनी अधिक ऊर्जा उत्पन्न होगी, हम उतने ही अधिकस्वस्थ तथा रोगमुक्त होंगे। कुछ समय पहले एकफिल्म मुन्ना भाई एम.बी.बी.एस. इसीलिए इतनी लोकप्रिय हुई थी। उसमें यह दिखाया गया था कि संजय दत्त कोई असली डाक्टर नहीं था, लेकिन वह मरीजों में हंसी-खुशी पैदा कर उनके भीतर ठीक हो जाने का एहसास भर देता था। यह गलत नहीं है। हंसने और खुश रहने से शरीर के भीतर टी लिंफोसाइटस् अधिक क्रियाशील हो जाते हैं, जिनसे उन प्राकृतिक सेलों के निर्माण में वृद्धि होती है, जिन्हें किलर सेल कहते हैं। ये किलर सेल कैंसर पैदा करने वाले खतरनाक सेलों को मार डालते हैं।

इसके अलावा, हंसने से तनाव उत्पन्न करने वाले हार्मोन कर्टिसोल तथा एपिनाप्राइन के स्तर में भी कमी आती है, जिससे शरीर तनावमुक्त हो जाता है। हंसने से शरीर में एंडोर्फिन नामक हार्मोन की मात्रा में वृद्धि होती है, जो शरीर के लिए स्वाभाविक रूप से दर्द निवारक और रोग अवरोधक का काम करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि हंसने से शरीर के लिए उपयोग हार्मोन्स का उत्सर्जन प्रारंभ हो जाता है जो हमारे अच्छे स्वास्थ्य के लिए जरूरी है। उर्दू शायर 'जफर' गोरखपुरी का एक दोहा है: **'हद से अधिक संजीदगी, सच पूछो तो रोग, आगा पीछे सोचते, बूढ़े हो गये लोग।'**

जो लोग जितने गंभीर बने रहते हैं, उतने ही ज्यादा उम्र के दिखते हैं और उसी के अनुसार उनका उत्साह भी मंद पड़ता जाता है। अत: हंसते रहिए और बुढ़ापे को सदा दूर रखिए। बुढ़ापा को रोकने में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। लेकिन अकेले में हंसने से तथा किसी और पर हंसने के बदले हमें सबके साथ हँसना सीखना चाहिए। बहुत से बॉस अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से हंसी-हंसी में कठिन कार्य करा लेते हैं। एक खुशमिजाज बॉस काम को बोझ नहीं बनने देता। लेकिन हंसी का आनन्द तभी है, जब सुनने वाला भी उसमें हिस्सा ले।

तात्पर्य यही है कि हंसी से सीखते हुए प्रसन्न रहना सीखो, हर परिस्थिति में प्रसन्न रहो, खुश रहो, परेशानी में भी प्रसन्न रहना सीख लेना एक कला है। जो हंसते-हंसते ही सीखी जा सकती है प्रसन्न रहना अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बना लेना ही सच में जीवन जीने की कला है। प्रसन्न रहने वाला व्यक्तित्व आत्म विश्वास से परिपूर्ण होता है और जीवन में आने वाले दु:खों और परेशानियों को हंसते-हंसते झेल लेता है। ऐसा व्यक्ति ही दूसरो के दु:खो को दूर कर औरों को भी हंसा सुखी कर सकता है, जो स्वयं ही दुखी है और अपने दु:ख को ही नहीं समझ सकता वह दूसरे की क्या सहायता करेगा। इसीलिए हम कहते है जो व्यक्ति दु:ख में भी हंसता और औरो को हंसाता है वही सच्चा मानव है। किसी ने खूब लिखा है 'खुद जियो औरो को भी जीने दो'। दु:खी लोगों के लिए निम्नलिखित साधारण सा वाक्य शयद कमाल कर सके। 'सब ठीक है और कोई फर्क नहीं पड़ता। (Everything is ok and Nothing Matters)

इसलिए खूब हंसो लेकिन किसी पर मत हंसो स्वयं पर हंसना सीखो, क्योंकि किसी फिल्मी शायर ने खूब लिखा है **''किसी की मुस्कराहटों पर हो निसार, किसी का दर्द ले सके तो ले उधार जीना इसी का नाम है।''**

अजय टंकारावाला

टंकारा ट्रस्ट द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों के लिए आप निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय 20,000/- रुपये देवें

❐❐❐

गौ-दान : महा-दान–उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों की पर्याप्त मात्रा में दूध की व्यवस्था हेतु एक गऊदान करें अथवा 75,000/- रुपये की सहयोग राशि गऊ हेतु देवें।
(तीन व्यक्ति मिलकर भी 25,000/- प्रति व्यक्ति भी दे सकते है।)

❐❐❐

गऊ पालन एवं पोषण हेतु 12,000/- रुपये का हरा चारा एवं पौष्टिक आहार की व्यवस्था (एक गऊ का वार्षिक व्यय)

❐❐❐

1000/- रुपये की सहयोग राशि देकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्मभूमि के सहयोगी सदस्य बनें। यह राशि आपको प्रतिवर्ष देनी होगी। इसलिए अपना पूरा पता अवश्य लिखवायें।
जो दान देवें उसके अतिरिक्त यह 1000/- रूपये राशि अवश्य देवें।

❐❐❐

श्री ओंकारनाथ महिला सिलाई-कढ़ाई केन्द्र की बेटियों द्वारा बनाए गए सामान को क्रय करके सहयोग कर सकते हैं।

❐❐❐

ब्रह्मचारियों के एक सत्र का भोजन 20,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर।

❐❐❐

ऋषि बोधोत्सव पर 1,50,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर एक सत्र के भोजन में सहयोग

❐❐❐

20,000/- रुपये की सहयोग राशि प्रति वर्ष किसी एक दिन का (जन्मदिवस अथवा स्मृति दिवस) ब्रह्मचारियों का भोजन देकर सहयोग कर सकते है।

❐❐❐

ब्रह्मचारियों के पहनने हेतु सफेद कपड़ा एवं दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुएं देकर

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि **खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, IFSC CODE PUNB0015300** में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 09560688950 पर देवें।

–:निवेदक:–

योगेश मुंजाल
कार्यकारी प्रधान

अजय सहगल
मन्त्री (मो. 9810035658)

उपकार्यालय: आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 सम्पर्क: 09560688950 (व्यवस्थापक)

डी.ए.वी. साहिबाबाद में दिल्ली प्रांत का आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

प्रथम चित्र में-शिविर का उद्घाटन करते हुए श्री एस के शर्मा, द्वितीय चित्र में श्री एस के शर्मा, तृतीय चित्र में यज्ञ करते हुए बायें से दायें श्री वी. के. चोपड़ा, ठा. विक्रम सिंह, श्री एस के शर्मा एवं श्री विनय आर्य।

प्रथम चित्र में श्री योगी सूरी एवं श्रीमती प्रिया सूरी का सम्मान करते हुए श्री वी के चोपड़ा एवं श्री अजय सहगल, द्वितीय चित्र में ध्वसजारोहण करते हुए श्री योगी सूरी

'आओ चरित्र उदात्त बनाएँ' के आधार पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, साहिबाबाद के वृहत् इतिहास में वह दिन अविस्मरणीय रहा जब विद्यालय प्रागंण में पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी, प्रधान डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्तृ समिति, नई दिल्ली एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली जी की प्रेरणा, शुभाकांक्षा और शुभाशीष से सार्वदेशिक आर्य वीर दल की प्रांतीय इकाई आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा आर्यवीरों का 10 दिवसीय ग्रीष्मकालीन आवासीय चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा शिविर का आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि पद्मश्री, आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी के मार्गदर्शन में श्री एस.के. शर्मा जी, निदेशक डी.ए.वी. प्रकाशन विभाग एवं सचिव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के द्वारा इस अभूतपूर्व समारोह का भव्य उद्घाटन किया गया, अपने उद्घाटन उद्बोधन में उन्होंने युवा शक्ति से संयम और सदाचार पर बल देने का आग्रह किया और आर्य समाज के पुरोधाओं द्वारा प्रशस्त मार्ग का अनुकरण और अनुसरण करने का आग्रह किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, मंत्री, कोषाध्यक्ष एवं अन्य विशिष्ट तथा गणमान्य सदस्य उपस्थित थे, अपने उद्घाटन भाषण में ओजस्वी वक्ताओं ने शिविरार्थियों का अभिनंदन किया तथा उन्हें शिविर आयोजन का मूल लक्ष्य एवं समस्त 10 दिनों की दिनचर्या से अवगत कराया। भव्य विरासत को सहेजते हुए इस ओजस्वित शिविर का समापन श्री योगी सूरी जी एवम् श्रीमती प्रिया सूरी जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष आर्य युवक समाज गरिमामयी उपस्थिति में उनके द्वारा ध्वजाभिनंदन से सम्पन्न हुआ। इस ऊर्जस्वित क्षणों में अपने संबोधन में उन्होंने आर्य वीरों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें 'सत्य सोचे, सत्य बोले, सत्य करें।' का मूलमंत्र देकर सत्य, एकाग्रता और सकारात्मक चिंतन की ओर अग्रसर किया। समापन कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामंत्री श्री विनय आर्य, जे.बी.एम समूह के फाइनेंस हेड श्री आनंदस्वरुप, टंकारा ट्रस्ट के मंत्री और डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्तृ समिति दिल्ली के सचिव श्री अजय सहगल, श्री वी.के. चोपड़ा, निदेशक पब्लिक स्कूल, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्तृ समिति नई दिल्ली, स्वामी विदेह योगी जी, प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाज सेवी श्रीमती सुषमा शर्मा, राष्ट्रीय निर्माण पार्टी के अध्यक्ष ठाकुर विक्रमसिंह, सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक डा. सत्यवीर शास्त्री, परोपकारिणी सभा अजमेर के प्रधान सत्यानन्द आर्य, श्री मनोज कुमार ठाकुर, प्रधानाचार्य डी.ए.वी. साहिबाबाद, दिल्ली एवं गाजियाबाद की विभिन्न आर्य संस्थाओं के अधिकारीगण, संन्यासी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है कि पंतजलि योग संस्थान के आचार्य बालकृष्ण जी के नेतृत्व एवं सान्निध्य में आर्यवीरों ने यज्ञोपवीत धारण किया वर्तमान में

प्रथम चित्र में श्री योगी सूरी एवं श्रीमती प्रिया सूरी को तलवार भेट करते हुए श्रीमती सुषमा शर्मा, श्री वी.के. चोपड़ा एवं श्री अजय सहगल। द्वितीय चित्र में श्री योगी सूरी एवं श्रीमती प्रिया सूरी को स्मृति चिन्ह भेट करते हुए श्रीमती सुषमा शर्मा, श्री वी.के. चोपड़ा एवं श्री अजय सहगल

प्रथम चित्र में उपस्थित आर्य वीरों को सम्बोधित करते हुए श्री योगी सूरी, द्वितीय चित्र में शिविर में पधारे 500 आर्य वीर यज्ञ करते हुए

पतनोन्मुख समाज को मानव-मूल्यों से अलंकृत करने हेतु युवा शक्ति का नैतिक उत्थान आवश्यक है, इस अनिवार्यता को सहेजते हुए डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, साहिबाबाद ने आदेशानुसार शिविरार्थियों के आवास एवं अन्य सुविधाओं का प्रबंध करते हुए इस महायज्ञ में अपनी सक्रिय भूमिका सुनिश्चित की। ज्ञात रहे कि शिविर में 500 से अधिक आर्यवीरों ने भाग लिया जिसमें प्रबुद्ध धर्म शिक्षकों एवं विद्वानों द्वारा शिविरार्थियों को आत्मिक, शारीरिक, व्यक्तित्व/ बौद्धिक एवं सामाजिक उन्नति हेतु प्रशिक्षित किया गया।

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मत में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 12000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदकः- योगेश मुंजाल (कार्यकारी प्रधान) **अजय सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 110 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज की आवश्यकता है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी। **एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 20,000/- रुपये है।** आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

निवेदकः- योगेश मुंजाल (कार्यकारी प्रधान) **अजय सहगल** (मन्त्री)

वैदिक उद्घोषों का महत्त्व

❒ डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

आर्य समाज के दैनिक साप्ताहिक कार्यक्रम हो अथवा वेद प्रचार के आयोजन हो वैदिक उद्घोष की परम्परा चली आ रही है, बड़ी श्रद्धा व आत्मीयता से ऊँची आवाज में सभी आर्य जन एक साथ हाथ उठा कर बोलते हैं। उद्घोष करते समय एक नई ऊर्जा व उत्साह की लहर उठती है, शरीर का रोम रोम रोमान्चित हो जाता है, कुछ आगे और करने की प्रेरणा मिलती है, साथियों सहित आगे बढ़ने और सबको आगे बढ़ने को आत्म बल मिलता है एक साथ एक स्वर में बोलने से संगठन और आपसी सहयोग तथा आपसी ताल मेल एवं प्रेम बढ़ता है। हम बोलते है, जो बोले सो अभय वैदिक धर्म की जय, वेद की ज्योति जलती रहे, महार्षि दयानन्द सरस्वती स्वामी श्रद्धानन्द, सरस्वती, दण्डी स्वामी गुरु विरजानन्द सरस्वती, महात्मा हंस राज आदि महापुरुषों के जय होना चाहिए घोष करते हैं. हमें पता इन सभी उद्घोषों का उद्देश्य यही है कि इन आर्यवीर कान्तिकारी वैदिक धर्म की ध्वजा के वाहक महापुरुष पूर्वजों के जीवन चरित्र इनके द्वारा किए गए राष्ट्र की रक्षा हेतु कर्मों से प्रेरणा लेकर सामाजिक क्रान्ति आगे बढ़ाते रहे जन जन में वेद प्रकाश का बिगुल बजाते रहे आर्य समाज एक सामाजिक क्रान्ति है जिसे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आरम्भ किया था इस हेतु उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की थी और वेद प्रचार हेतु शंखनाद किया था शंखनाद की ही प्रति ध्वनि हैं यह उद्घोष।

एक शंखनाद किया था श्री कृष्ण ने, जब महाभारत युद्ध हुआ था पांडवों व कौरवों की सेनाएं आमने सामने खड़ी थीं युद्ध हुआ, परिणामत: सत्य की विजय हुई। आज दो सेनाएँ आमने सामने हैं, आर्यों की तथा अनार्यों की। एक सेना के योद्धा हैं आर्य व आर्य समाजी तथा आर्य विद्वान और आर्य उपदेशक तथा भजनोपदेशक जो आज की बढ़ती सामाजिक बुराइयों कुरीतियाँ पाखण्डों के विरुद्ध अपने सत्यार्थ प्रकाश आर्यो उद्देश्य रत्न माला, वेद वेदांग रूपी शस्त्रों को लेकर खड़े हैं, लड़ रहे हैं. श्री कृष्ण के युद्ध के शेखवाद जैसा ही वैदिक उद्घोष है जिसकी आवाज चारों ओर चारों दिशाओं में गुंजायमान हो रही है जहाँ भी अज्ञान रूपी अंधकार है उसका समूल नाश कर देगी।

यही उद्घोष किया था जब श्री राम ने सीता स्वयंवर में धनुष की प्रत्यंचा तोड़ी थी और जब राम राजा का युद्ध हुआ था शत्रु दल के हृदय धनुष की टंकार से दहल उठे थे।

यही शंखनाद था यही उद्घोष थे जो भारत के वीर शिरोमणियों के नाम से हृदय में रक्त का संचार ऊफान लेता था वह था देवासुर संग्राम में जब महाराजा दशरथ व कैकेयी ने धनुष की टंकार से असुरों को मृत्यु लोक पहुँचा दिया था।

राणा कुम्भा से लेकर महारायण प्रताप तक व शिवाजी जैसे भारत मां के सपूत भारतमाता की जय के उद्घोषों को बोल फिर शत्रु सेना पर टूट पड़ते थे।

स्वतन्त्रता संग्राम में क्रान्तिकारी वन्देमातृरम भारत माता के पावन उद्घोषों के साथ अंग्रेजों के विरूद्ध खड़े हो गए थे इन्हीं उद्घोषों को बोलकर फांसी के फन्दे चूम लिए थे।

आज भी यह उद्घोष हमें उन महान देश भक्त वीर शिरोमणि क्रान्ति कारी भगत सिंह चन्द्र शेखर पं. लेखराम पं. रामप्रसाद बिस्मिल वीर हकीकत राय जैसे लाखों भारत माता के वीर सपूतों की याद दिलाते हैं। भारत के गौरवशाली इतिहास के निर्माताओं क्रान्तिकारियों आर्यो के गौरव महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके पथ पर चलकर अमर क्रान्ति वीर आर्यवीरों को याद कर उनके जीवन से प्रेरणा ले कर उनके पावन कर्मो को आगे बढ़ाते रहे जो वैदिक धर्म के प्रकाश की ज्योति प्रज्वलित की थी उसे कम न होने दें। आज भी राष्ट्र में अनेक सामाजिक कार्य करने हैं गुरुडम, मूर्ति पूजा, परिवारों में विघटन, बड़ों के साथ अनाचार, वृद्धों के साथ दुर्व्यवहार, आधुनिकता के ताने बाने में फिल्मी फूहड़, नंगापन कामुकता प्रधान श्रृंगार! नैतिकता व चरित्र का पतन उधर लव समलैंगिक विवाह, लिव इन रिलेशन शिप, बांग्लादेशी व रोहिंग्याओं की भारत को शरण ग्रह बनाना व विदेशी विधर्मियों आतंकियों की घुसपैठ उनका आधार कार्ड पैन कार्ड व राशन कार्ड भ्रष्टाचार के तहत बनवा देना दरगाहाँ मजारों का दिन रात अवैध क्रम के राजमार्गो व सड़को रेल लाइनों पर निर्माण व अन्य अनेक षड्यन्त्रों का जाल बुनकर राष्ट्र व समाज को क्षति पहुँचाएँ। ऐसे षड्यन्त्र आज किए जा रहे हैं, जिनकी कल्पना करना कठिन है, परन्तु आर्यो को आर्य समाज को भवनों से बाहर निकल कर यह सब देखना व समझना होगा राष्ट्र के हित में जो भी सम्भव हो वह आर्यो को करना होगा आज अपने पूर्वजों से प्रेरणा लेकर हमें चुप नहीं बैठना है। गली गली घर घर ग्राम के नगरों में वह प्रचार करना होगा।

यह तभी सम्भव है जब हम कम से कम आपसी भेद भाव तो मिटा लें आर्य समाजों में पुराने दिवंगत आर्यजनों को भी याद कर लें और जो आर्य समाजी परिवार हैं उनमें तालमेल बढ़ाएँ एक दूसरे के सहयोगी बनें आज हो यह रहा है कि जो पदाधिकारी बन जाते हैं वह अपने तक ही सीमित रह जाते हैं। प्रत्येक आर्य समाज के प्रत्येक पदाधिकारी को नए पुराने सभी आर्य परिवारों से सम्पर्क रखना चाहिए एक दूसरे के दुख दर्द में सहयोग करें। होता यह है कि आर्य समाज में कोई नया व्यक्ति आता है तो उसके बारे में जानने की आवश्यकता नहीं समझी जाती कोई नया पुराना आर्य समाजी नहीं आ रहा है उसकी जानकारी नहीं ली जाती। शंका समाधान नहीं होता आर्य समाज के अधिकतर भवन व संस्थाओं सम्पत्ति तक सीमित रह गए हैं कुछ धन के लोभियों ने आर्य समाज को वहां से मिलने वाली सम्पत्ति की ओर कुदृष्टि डालनी आरम्भ कर दी है। अनेक स्थानों पर झगड़े चल रहे हैं मामले न्यायालय के आधीन है। हम यदि आर्य समाज में आ रहे हैं तो हमको आर्य ही होना चाहिए तथा जिन महापुरुषों के नाम का उद्घोष करते हैं उनका अनुकरण करें प्रयत्न करें कि आपसी प्रेम सहयोग तथा शास्त्रों का स्वाध्याय बढ़ाते रहें शंकाओं का समाधान करते रहें ऋषिवर के अनुयायी बनें। तभी उद्घोषों की सार्थकता बढ़ेती।

– चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा, मो. 9567793541

❒ जो मनुष्य किसी की उन्नति की केवल इच्छा ही नहीं करते है किन्तु सभी के ऐश्वर्य को बढ़ाने की इच्छा करते हैं वे सूर्य के समान उपकार करने वाले होते है–धर्मात्मा होते हैं। अर्थात् सूर्य संसार को प्रकाश देता है बदले में कुछ लेता नहीं है। **–स्वामी दयानन्द**

स्वाधीनता के मायने

❒ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

स्वाधीनता शब्द के अर्थ के अनर्थ से एवं इसके दुरुपयोग से वर्तमान समय में हमारे देश में बहुत सी समस्याएं पैदा हो रही हैं। हम स्वतंत्र देश के नागरिक यह समझते हैं कि हम जो चाहें जब चाहें जैसे चाहें करने के लिए स्वतंत्र है और हमें कोई भी रोक नहीं सकता । आज इस देश का नागरिक स्वतंत्रता के इसी अर्थ के अनर्थ के कारण अपनी भौतिक प्रगति को लेकर अपने लाभ के लिए स्वार्थ के वशीभूत होकर अपने अधिकारों के प्रति अत्यंत सजग है लेकिन कर्तव्यों के प्रति पूर्णतया उदासीन है। हम समझते हैं कि स्वाधीनता हमें हर प्रकार के नियमों कायदे कानूनों के बंधन से मुक्त करती है । व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय नियमों कानूनों के बंधन से मुक्ति का भाव और केवल स्वयं के भौतिक सुखों की प्राप्ति की तीव्र इच्छा के वशीभूत आज इस देश का नागरिक हर प्रकार का अनाचार कर रहा है और इससे भी बढ़कर यह कि अपने इस अनाचार को वह अपना अधिकार मानकर अपनी स्वाधीनता की दुहाई देता है । इसीलिए आज इस देश का नागरिक व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर अधोगति की ओर फिसल रहा है । अन्यथा एक राष्ट्र की आयु के संदर्भ में 60-62 वर्ष की आयु मात्र बाल्यावस्था मानी जाती है और अपनी इतनी कम आयु में राष्ट्र का इतनी व्याधियों से ग्रस्त हो जाना इसी बात का द्योतक है कि राष्ट्र की तथाकथित विकास की दिशा और दशा ठीक नहीं है। राष्ट्र के नागरिक अधिकारों के प्रति उग्र लेकिन कर्तव्यों के प्रति पूर्णतया उदासीन है और इसे स्वाधीनता के दायरे में रखते हैं ।

दरअसल स्वाधीनता के मायने क्या है इसे समझे बिना हम समस्याओं का इलाज नहीं कर सकते । जिस प्रकार कोई डाक्टर बिना बीमारी की मूल जड़ को जाने उसका इलाज नहीं कर सकता। पाणिनी अष्टाध्यायी के सूत्र **स्वतंत्रः कर्ता** 1/4/54 के अनुसार मनुष्य किसी कार्य को करने, ना करने वा अन्यथा करने के लिए स्वतंत्र हैं परन्तु स्वतंत्र कौन है जिसकी इन्द्रियां, मन, बुद्धि, प्राण, अन्तःकरण उसके आधीन हैं । इसे एक आसान उदाहरण से समझते हैं जिस प्रकार किसी वाहन का चालक केवल तभी तक दुर्घटना से बचा रह सकता है जब तक वह ना केवल वाहन को अपने आधीन रखता है तथा यातायात के नियमों के अनुसार चलाता है और यदि चालक शराब के नशे में या तीव्र गति के रोमांच के कारण वाहन पर नियंत्रण खो बैठता है और नियमों को तोड़ता है तो दुर्घटना अवश्यंभावी है । ठीक उसी प्रकार जब मनुष्य का साधन अर्थात इन्द्रियां, मन, बुद्धि आदि उसके आधीन होती है और वह सामाजिक राष्ट्रीय नियमों कानूनों का पालन करता है तभी तक मनुष्य की जीवन यात्रा कुशलतापूर्वक चलती है। और यदि उल्टा हो गया और मनुष्य अपने साधनों के आधीन हो गया अर्थात मन बुद्धि इन्द्रियों पर उसका नियंत्रण नहीं रहा और वह भौतिक सुखों की चाह में मन इन्द्रियों का दास बनकर सामाजिक राष्ट्रीय नियमों कानूनों को तोड़ने लगा तो निश्चित रूप से अपनी स्वयं की जीवन यात्रा को तो अधोगति की ओर ले जायेगा अपितु समाज राष्ट्र में भी लूट, डकैती, चोरी, भ्रष्टाचार, भूख, गरीबी जैसी बीमारियों को जन्म देगा।

मनमानी से गर चलो , तो तुम मन के दास ।
भोगोगे फिर दंड यहां , होकर खिन्न उदास ॥

अथर्ववेद में **अश्वस्य वारो गोशपद्यके** । 20/129/18 द्वारा वेद भगवान ने मनुष्य को संदेश दिया हे आत्मन् ! तू घुड़सवार होकर घोड़े के खुरों में कुट पिट रहा है । वेद में मनुष्य को स्वयं को पहचान कर इन्द्रियों की विषय वासना में फंसकर मन का दास बनकर रह रहा है। मनुष्य इन्द्रियों रूपी घोड़ों की सवारी करके रईस बनने के स्थान पर उन घोड़ों की सेवा करने वाला सईस बन चुका है। फिर मन इन्द्रियों का दास उलटे अपने साधनों के आधीन रहने वाला मनुष्य स्वाधीन कैसे कहला सकता है वह तो उलटे अपने ही साधनों के आधीन हो गया। सामवेद में भी **अहं गोपतिः स्याम्।** 18/35 कहकर मनुष्य को इन्द्रियों रूपी गौओं का स्वामी बनने का आदेश दिया। यह ठीक है कि अत्यंत गतिशील मन एवं चंचल इन्द्रियों को बस में करना दुष्कर कार्य है परन्तु मनुष्य यदि इनका स्वामी बनकर रईस घुड़सवार बनना चाहता है तो अभ्यास वैराग्य द्वारा इन्हें बस में करना चाहिये। हमें सभी साधनों विशेष रूप से मन बुद्धि इन्द्रियों को अपने आधीन करके अर्थात सही अर्थों में स्वाधीन होकर सामाजिक, राष्ट्रीय नियमों का पालन करते हुए कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए। कर्तव्य पालन के समय अधिकार स्वतः प्राप्त होते हैं। बिना कर्तव्य जाने अधिकार मांगना अनुचित है। पराधीन सपनेहुं सुख नाहिं और साधन आधीन तो पराधीनता से भी अधिक कष्टदायक है। यजुर्वेद में भी **अदीनाः स्याम शरदः शतम्** । यजु. 36/24 द्वारा सौ वर्षों तक जीवन पर्यन्त अदीन, स्वाधीन रहकर जीवन की बात कही गई है।

इसलिए मनुष्य से यह अपेक्षित है कि वह स्वाधीनता के सही अर्थ को समझ मन बुद्धि इन्द्रियों को बस में करके उनका स्वामी बन अपने सामाजिक, राष्ट्रीय दायित्वों, कर्तव्यों का पालन करता हुआ भौतिक प्रगति, आध्यात्मिक उन्नति और मानसिक शांति के पथ पर चले। ऐसा स्वाधीन नागरिक सामाजिक नियमों वेद अनुकूल धर्म मार्ग पर चलता हुआ व्यक्तिगत, संविधान का पालन करता हुआ व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रगति में सहायक सिद्ध होवे ।

– 502 जी एच 27, सैक्टर 20 पंचकूला, मो. 09467608686

आवश्यक सूचना

टंकारा समाचार इंटरनेट एवम् वट्सअप पर उपलब्ध। सभी सदस्य पाठकों से अनुरोध है कि अपना ई-मेल पता एवम् वट्सअप मोबाइल नम्बर **9560688950** पर **सदस्य संख्या एवम् नाम सहित** भेजे ताकि हम पंजीकृत कर सके जिससे कि आपको उपरोक्त माध्यम से जोड़ा जा सके।

यज्ञोपवीत का महत्त्व

❑ स्व. स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

वैदिक धर्म में संस्कारों का बहुत महत्व है। वैदिक धर्म के अनुसार मनुष्य की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति के लिए सोलह संस्कारों का करना अत्यन्त आवश्यक है। सभी संस्कार महत्वपूर्ण हैं, परन्तु इन सबमें उपनयन संस्कार एक विशिष्ट स्थान रखता है। यही वह संस्कार है जिससे बालक की शिक्षा और दीक्षा का प्रारम्भ होता है एवं उसे द्विजत्व की प्राप्ति होती है। इसी समय से उसे वैदिक कर्मकाण्ड और यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त होता है, जैसा कि वेद में भी आदेश है-

यो यज्ञस्य प्रसाधनस्तन्तुर्देवेष्वाततः। तमाहुतं नशीमहि॥ ऋ 10.57.2

अर्थात् सामान्यजनों की यह कामना है कि जो यज्ञ का उत्तम साधनरूप तन्तु=उपवीत का धागा विद्वानों में प्रचलित है, उस विधि -विहित सूत्र को हम प्राप्त करें।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि यज्ञोपवीत धारण न करना अपने-आपको विद्या तथा यज्ञ के अधिकार से वंचित रखना है और यज्ञोपवीत के बिना बालक द्विज भी नहीं बन सकता, अतः उन्नति के इच्छुक नर-नारियों को यज्ञोपवीत संस्कार पर विशेष ध्यान देना चाहिए। वैदिक धर्म के अनुसार यज्ञोपवीत एक अत्यन्त वैज्ञानिक और महत्वपूर्ण संस्कार है। आचार्य अथवा गुरु यज्ञोपवीत देते समय अथवा यज्ञोपवीत बदलते समय व्यक्ति जिस मन्त्र का उच्चारण करता है उसी से यज्ञोपवीत की महिमा स्पष्ट है-

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च यज्ञोपवीत बलमस्तु तेजः

पार. गृह 2.2.11

यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥

पारस्करगृह्यसूत्र 2.2.11

परमपवित्र, आयुवर्धक, अग्रणीयता का द्योतक, श्वेतवर्ण का यह यज्ञोपवीत, जिसे प्रजापति परमात्मा ने प्रत्येक बालक को सहजस्वभाव से-गर्भ से, जरायु (गर्भ की झिल्ली) के रूप में प्रदान किया है, उसको तू धारण कर, पहन। यह यज्ञोपवीत तुझे बल और तेजदायक हो। तू यज्ञोपवीत है, मैं तुझे यज्ञ की यज्ञोपवीतता के साथ पहनता हूँ। इस मन्त्र में यज्ञोपवीत के बल और तेज प्रदान करनेवाला कहा गया है। यज्ञोपवीत के तीन तारों में बल और तेज दृष्टिगोचर नहीं होता, परन्तु जो इन तीन तारों के रहस्य को हृदयङ्गम कर लेता है, उसमें बल और तेज का संचार हो जाता है। इसके रहस्य को समझकर ही लाखों सिक्खों, राजपूतों और मराठों ने अपने सिरों की आहुति दे दी, परन्तु यज्ञोपवीत का त्याग नहीं किया। जिस प्रकार भारतीय शासन के तिरंगे झण्डे का कोई विज्ञान है, इसमें तीन रंग क्यों हैं? इसके मध्य में स्थित चक्र का क्या अभिप्राय हैं? इसी प्रकार यज्ञोपवीत का भी रहस्य है। यज्ञोपवीत में नौ तन्तु, तीन दण्ड और पाँच गाठें होती हैं। इसके नौ तन्तुओं में नौ देवताओं की कल्पना की गई है यथा-

ओंकारः प्रथमे तन्तौ द्वितीयेऽग्निस्तथैव च।
तृतीये नागदैवत्यं चतुर्थे सोमदेवता॥
पंचमे पितृदैवत्यं षष्ठे चैव प्रजापतिः।
सप्तमे मरूतश्चैव अष्टमे सूर्य एव च॥
सर्वे देवास्तु नवमे इत्येतास्तन्तुदेवताः॥

सामवेदीय छान्दोग्यसूत्र-परिशिष्ट पहले तन्तु में ओंकार, दूसरे में अग्नि, तीसरे में अनन्त, चौथे में चन्द्रमा, पाँचवें में पितृगण, छठे में प्रजापति, सातवें में वायुदेव, आठवें में सूर्य और नवें तन्तु में सर्वदेवता प्रतिष्ठित हैं। यज्ञोपवीत धारण करनेवाला बालक यज्ञोपवीत के तन्तुओं में स्थित नौ देवताओं के निम्न गुणों को अपने अन्दर धारण करता है-

ओंकार- एकतत्व का प्रकाश, ब्रह्मज्ञान। ❑ अग्नि-तेज, प्रकाश, पापदाह, ऊर्ध्व-गमन। ❑ अनन्त-अपार धैर्य और स्थिरता। ❑ चन्द्रमा-मधुरता, शीतलता, सर्वप्रियता। ❑ पितृगण-आशीर्वाद, दान और स्नेहशीलता। ❑ प्रजापति-प्रजापालन, स्नेह, सौहार्द। ❑ वायु-पवित्रता, बलशालिता, धारणशक्ति। ❑ सूर्य-गुणग्राहकता, प्रकाश, अन्धकारनाश, मल-शोषण। ❑ सर्वदेवता-दिव्य और सात्विक जीवन।

जो यज्ञोपवीत के इन गुणों को स्मरण कर, इनसे प्रेरणा प्राप्त करेगा, उसका जीवन उच्च, महान्, यशस्वी और तेजयुक्त क्यों न होगा?

नौ तन्तुओं का एक और भी रहस्य है। यह शरीर अथर्ववेद के अनुसार **"अष्टाचक्रा नवद्वाराः"** (10.2.31)। आठ चक्र और नौ द्वारों का नगर है, अतः नौ तन्तु हमें एक सन्देश देते हैं कि प्रत्येक द्वार पर एक-एक प्रहरी नियत करना है, जिससे हम कोई बुरा कर्म न कर सकें, इन नौ द्वारों में से कोई बुराई हमारे अन्दर प्रविष्ट न हो सके। ये नौ द्वार हैं-दो आंख, दोन कान, दो नासिका के छिद्र, एक मुख और दो मल-मूत्र त्यागने के छिद्र। हमें प्रत्येक द्वार पर एक-एक चौकीदार बैठाना चाहिए। हम आँखों से अच्छे दृश्य देखें, प्रभु की रचना के सौन्दर्य को निहारें, गन्दे-दृश्य और स्वास्थ्य को नष्ट करनेवाले सिनेमादि न देखें। हमारी दृष्टि ऐसी हो-

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति॥

दूसरों की स्त्रियों को माता के समान, दूसरों के धन को मिट्टी के ढेले के समान और सब प्राणियों को अपने आत्मा के समान देखें, क्योंकि ऐसा देखनेवाला ही वास्तव में देखता है। कानों से हम प्रभु का गुणगान सुनें, प्रभु का कीर्तन सुनें, गाली-गलौच और गन्दे गाने न सुनें। यज्ञोपवीतधारी का जीवन वेदमय होना चाहिए और वेद के अनुसार-**भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम।** यजु. 25/21 कानों से हम उत्तम बातें सुनें।

इसी प्रकार नाक से उत्तम, दिव्य गन्ध ही सूँघें, विषय-वासनाओं की गन्ध ही न लेते रहें। जिह्वा से स्वास्थ्य-वर्धक उत्तम और सात्विक पदार्थों का सेवन करें। उपस्थ और गुदा का भी संयम रखें। सच्चे ब्रह्मचारी बनें। यह है यज्ञोपवीत के नौ तन्तुओं का विज्ञान। यज्ञोपवीत में तीन दण्ड अथवा धागे होते हैं। ये तीन दण्ड मन, वचन और कर्म की एकता सिखाते हैं। जो मन में है, वही वचन में होना चाहिए और उसी प्रकार के कर्म करने चाहिए। जब मन, वचन और कर्म में एकता होती है, तब मनुष्य महात्मा बन जाता है, अन्यथा वह दुरात्मा हो जाता है।

तीन दण्डों का एक और भी अभिप्राय है। वह यह कि कायदण्ड, वाग्दण्ड और मनोदण्ड, अर्थात् शरीर, वाणी और मन को संयम में रखना। कायसंयम के द्वारा ब्रह्मचर्य का पालन, गुरुओं का आदर और सत्कार, अहिंसा और तपादि। वाणीसंयम के द्वारा सत्य बोलना, हितकर बोलना, मित बोलना और मधुर बोलना तथा स्वाध्याय करना और मनसंयम के द्वारा मन के विकारों को दूर करके उसे शुद्ध, पवित्र और शिवसंकल्पोंवाला बनाना तथा ईश्वर-चिन्तन् करना। यज्ञोपवीतधारी के लिए शरीर, वाणी और मन का यह संयम अत्यावश्यक है।

तीन तारों में एक तीसरा रहस्य भी छुपा हुआ है। यह संसार त्रिगुणात्मक है, सत्त्व, रज, और तम की तीन लड़ियों में समस्त प्राणी बँधे हुए हैं। यज्ञोपवीत के तीन धागे यह स्मरण कराते हैं कि हमें इस संसार से निकलना है। संन्यासी संसार के मोह, माया और ममता से निकल जाता है, इसीलिए संन्यासाश्रम में यज्ञोपवीत उतार दिया जाता है।

यज्ञोपवीत के तीन तारों में विश्वविज्ञान भरा हुआ है। ये तीन तार एक और संकेत भी दे रहे हैं, वह यह संसार में तीन प्रकार के ऐश्वर्य हैं- सत्य, यश और श्री। यज्ञोपवीतधारी को इन तीनों में से कोई एक चुनना होता है। ब्राह्मण के लिए सत्य मुख्य है अन्य दो बातें गौण हैं। ब्राह्मण बनना है तो चोटी को सत्यवादी ब्राह्मण बनना, ऐसा-वैसा नहीं। क्षत्रिय बनना है तो यशस्वी और यशस्वी भी चोटी का, युद्ध में पीठ न दिखानेवाला, परन्तु साथ ही जीवन में सत्य भी हो। वैश्य बनना है तो साधारण पैसे वाला नहीं, अपितु चोटी का बनना। कुबेर और भामाशाह भारत के ही थे। धन कमाना, परन्तु सचाई के तीन और यशवालों की रक्षा भी करना।

तीन तार एक और रहस्य के भी सूचक हैं। प्रत्येक मनुष्य पर तीन प्रकार के ऋण होते हैं-पितृऋण, ऋषिऋण तथा देवऋण, प्रत्येक यज्ञोपवीतधारी को इन ऋणों से अनृण होने का प्रयत्न करना चाहिए।

माता-पिता जन्म देकर तथा लालन-पालन करके हमें बड़ा करते हैं। उनकी सेवा-शुश्रूषा करके यह ऋण कुछ सीमा तक चुकाया जा सकता है, इसीलिए उपनिषद् के ऋषि ने 'मातृदेवो भव' और 'पितृदेवो भव' का उपदेश दिया है। ब्रह्मा से लेकर महर्षि दयानन्दपर्यन्त सच्चे त्यागी, तपस्वी और वीतराग विद्वान जिन्होंने वैदिक संस्कृति और सभ्यता को हम तक पहुंचाया है तथा समय-समय पर हमारा मार्गदर्शन करते रहे हैं, हमारा कर्तव्य है कि हम उनके द्वारा दी हुई विद्या को पढ़कर, उपदेशों और लेखों द्वारा दूसरों तक पहुंचाएं। यह ऋषिऋण से अनृण होने की विधि है।

वायु, अग्नि, जल आदि देव हैं, यज्ञ द्वारा इनको शुद्ध करना देवऋण से अनृण होना है। इसका एक और अभिप्राय भी है, इन्द्रियों को भी देव कहते हैं, अतः समस्त इन्द्रियों का सदुपयोग जानकर उन्हें दृढ़ बनाना और उनका ठीक प्रयोग करना भी देवऋण चुकाना है। देव का अर्थ है परमात्मा। प्रतिदिन परमात्मा की उपासना करना।

यज्ञोपवीत में पाँच गाँठे होती हैं। पाँच गाँठे पंचमहायज्ञों को करने की ओर संकेत कर रही हैं। पितृऋण, ऋषिऋण और देवऋण चुकाने के लिए इन यज्ञों का करना अनिवार्य है। पाँच ग्रन्थियों का एक और भी अभिप्राय है। प्रत्येक मनुष्य में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकाररूपी पाँच गाँठें हैं। यज्ञोपवीत की ये ग्रन्थियाँ यज्ञोपवीतधारी को यह स्मरण कराती हैं कि इन गाँठों को खोलना है। यज्ञोपवीत वाम स्कन्ध से धारित किया जाकर हृदय और वक्षस्थल पर होता हुआ कटि-प्रदेश तक पहुँचता है। इसमें भी एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक रहस्य छुपा हुआ है। प्रत्येक मनुष्य पर तीन प्रकार के बोझ हैं। बोझ का भार कन्धे पर पड़ता है, इसलिए यज्ञोपवीत कन्धे पर होता है। संसार में बोझ को वही वहन कर सकेगा जो कटिबद्ध है, जिसकी कमर कसी हुई है, इसीलिए यज्ञोपवीत कटि-प्रदेश तक लटकता है। संसार में सफलता वही प्राप्त करेगा, जो लक्ष्य को अपने सम्मुख रखेगा और लक्ष्य उसी व्यक्ति के समक्ष रह सकता है जो किसी कार्य को हृदय से करे, इसलिए यज्ञोपवीत हृदय पर होता है। यज्ञोपवीत का कन्धा, हृदय और कटि-प्रदेश पर ही ठहराने का एक और भी रहस्य है और वह यह कि कन्धे के ऊपर ज्ञानेन्द्रियाँ आरम्भ हो जाती हैं, जिह्वा इसका अपवाद है। मनुष्य देव बन जाता है, वह संन्यास ले लेता है, और यज्ञोपवीत उतार दिया जाता है।

तीन ऋण एवं यज्ञों को हृदय से स्वीकार किया जाता है। हृदय वाम भाग में होता है, इसीलिए यज्ञोपवीत वाम स्कन्ध से हृदय पर होता हुआ दाहिनी ओर धारण किया जाता है। प्रत्येक यज्ञोपवीतधारी अपने राष्ट्र की उन्नति के लिए, सभ्यता और संस्कृति के प्रचार और प्रसार के लिए तथा मातृभाषा की रक्षा के लिए कटिबद्ध रहे, इसीलिए यह यज्ञोपवीत कटि-प्रदेश तक लटकता है।

यज्ञोपवीत के सम्बन्ध में दो बातें और स्मरणीय हैं। एक यह कि प्रत्येक व्यक्ति को एक समय में एक ही यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए, दो नहीं। दूसरी यह कि यज्ञोपवीत श्वेत होना चाहिए क्योंकि मन्त्र में से ''शुभ्रम्'' कहा गया है- मेखला- उपनयन-संस्कार में मौंजी भी धारण करनी पड़ती है। वेद में मेखला के गुण इस प्रकार वर्णन किये हैं-

श्रद्धाया दुहिता तपसोऽधिजाता स्वसा ऋषीणां भूतकृतां बभूव।
सा नो मेखले मतिमा धेहि मेधामथो नो धेहि तप इन्द्रियं च॥

अथर्व. 6.133.4

यह मेखला श्रद्धा की पुत्री, तप से उत्पन्न होनेवाली, यथार्थकारी ऋषियों की बहिन है। यह मेखला हमें बुद्धि, मेधा, कष्टों को सहन करने का सामर्थ्य और इन्द्रियों की विशुद्धता प्रदान कराती है।

मेखला धारण जहाँ वीर्य-रक्षण में सहायक है तथा अण्डकोषवृद्धि आदि रोगों को रोकती है, वहां शतपथब्राह्मण के शब्दों में यह आत्मतेज भी प्रदान करती है, इसीलिए उपनयन के समय इसके धारण करने का विधान है। **अन्य मतों में यज्ञोपवीतः** सिक्खों के प्रथम गुरु श्री नानकदेवजी की एक वाणी इस विषय में बहुत ही महत्वपूर्ण है-

दया कपाह सन्तोष सूत, जत गंठी सत वट्ट।
एह जनेऊ जीऊ का हयिता पाण्डे धत्त॥
ना यह तुट्टे ना मल लागे न यह जले न जाय।
धन्न सो मानुसा नानका जो गल चल्लै पाय॥

श्री नानकदेव जी यज्ञोपवीत को अतिश्रेष्ठ समझते थे, अतः उन्होंने मानसिक यज्ञोपवीत धारण करने पर विशेष बल दिया है, क्योंकि वह न कभी टूट सकता है और न कभी मैला हो सकता है।

जैनमत के आदिपुराण में लिखा है कि ''इस सवर्णी काल के प्रथम चक्रवर्ती भरत महाराज ने दिग्विजय यात्रा करके अनेक सेनासहित दिग्विजय की प्रथा चलाई। एक दिन राजद्वार में घास आदि बोकर उन्होंने सभी प्रजा को बुलाया। जो लोग घास पर से दरबार में आये उन्हें पूर्ण अहिंसक न समझा गया और जीव-हिंसा के भय से जो लोग घास पर से न आकर अन्य मार्ग से आये वे श्रेष्ठ ब्राह्मण पदवाच्य हुए और उन्हें उपवीत दिया गया।'' इस प्रकार जैनग्रन्थों में भी यज्ञोपवीत का स्पष्ट उल्लेख है। महात्मा गौतम बुद्ध ने ''उपनयन को धर्ममार्ग पर ले-जानेवाला और उपवीत को शान्तपद की प्राप्ति'' कहकर उल्लेख किया है।

पारसियों के यज्ञापेवीत धारण करने का मन्त्र इस प्रकार है-

फ्राते मज्दाओ वरत् पौरवनीम् एयाओं धनिमस्तेहर पाये संघेम। मैन्युतस्तेम् बंधुहिम् दयेनीम् मज्दवास्राम्।

ऐ डोरा! तू तारों के समान तेजस्वी तथा श्रेष्ठ दैवीशक्तिवाला है तथा आयु का देनेवाला है। पवित्र पारसी धर्म के चिन्ह यज्ञोपवीत! तुझे सबसे पहले मज्दा ने धारण किया था। मैं तुझे पहनता हूँ।

इस प्रकार इतिहास के अवलोकन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वैदिक धर्म में यज्ञोपवीत अत्यन्त प्राचीनकाल से चला आ रहा है।

उपनयन का समयः इस संस्कार का वेदानुकूल समय ब्राह्मण के

(शेष पृष्ठ 11 पर)

True Picture of Maharshi Dayananda Saraswati

Dayananda – the great spiritual hero of his days

❑ **Author: Ved Mitra Thakore ('Fakire Dayananda')**

Dayananda believed in the Vedas and the Vedas alone. He made the Vedas, the anchor-sheet of his life, upon which he stood adamantine like a rock and cracked and crushed anything and everything that came in his way, while preaching the superb and sublime wisdom of the Vedas. He was always victorious and glorious and never defeated. He roared like a lion the mighty philosophical uproars of the Vedas and Vedic literature. Pundits, Prophets and Popes of India were startled. They all came to meet him half way but all were smashed to the level, one after another without any exception whatsoever. He, with his sparkling talents and unbeaten genius, beautifully blended with bold understanding and gigantic will-force, came out with flying colors, with the grace of a mighty champion. A formidable aggression, from different scholars of the different branches of the different sects, followed him day and night. From dawn to dusk he was busy discussing, preaching, talking, and arguing with these scholars. No scholar ever defeated him.

Why? Why Dayananda was always successful? This is the question. Here goes the answer:

Dayananda was successful because:
His was the voice of the Vedas.
His was the vision of the Vedas.
His was the eye of the Vedas.
His was the thought of the Vedas.

He never believed in dogmas and dogmatism, just like other sectarian Acharyas – Shankara, Ramanuja, Madhva and Vallabha etc. These sectarian Acharyas preached their own individual thoughts and emotions in the name of religion and philosophy. And, as such they have polluted and desecrated the entire range of the Vedic literature.

It was the eye of Dayananda that perceived this particular mischief played by these Acharyas and declared aloud from the top of his voice that the Vedas are quite free from dogmas and dogmatism. The Vedas are the Divine revelation unto humanity by Almighty God, whose name be exalted and whose perfection be extolled.

My most beloved readers! Here in India or abroad! I would like to impress upon you that the most outstanding feature of Dayananda was that he never believed in any sort of mental creations, human imaginations and individual thoughts. He never advocated his own ways and means. This is the secret of his grand success. He believed in the Vedas and he preached the wisdom of the Vedas alone. No mixture at all. No hotchpotch at all.

His works are, therefore, free from personal emotions, individual thoughts and ideology. His works are solid, substantial, soul-stirring, intellectual, logical and at once scientific. Study his monumental treatise 'Satyartha-Prakasha' (The Light of Truth) and believe me, you will be altogether a changed being.

In order to understand Hinduism in its entirety you have got to understand Dayananda. Without understanding Dayananda, you cannot understand the Hindu religion, culture and philosophy, if at all you take seven births in this world. Why?

Because Dayananda alone has thrown flood-light on all aspects of Hindu religion and philosophy. He first gave us the true vision about the Vedas as the base of Hinduism.

No other Acharyas have done so, so far. This is all I have to say. And therefore,

Glory! Glory! To Dayananda Maharaja.
Hail! Hail! To Dayananda Maharaja.
The great world preacher!

[Source: Dayananda the Great, Preamble
Post Contributed by Bhavesh merja

(पृष्ठ 10 का शेष)

लिए 8 वर्ष, क्षत्रिय के लिए 11 वर्ष और वैश्य के लिए 12 वर्ष है, जैसाकि मनुजी महाराज ने लिखा है-

गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनयनम्।
गर्भादेकादशे राज्ञो गर्भात्तु द्वादशे विशः॥ मनु. 2/36

गर्भ से आठवें वर्ष में ब्राह्मण के बालक का यज्ञोपवीत हो जाना चाहिए। गर्भ से ग्यारहवें वर्ष में क्षत्रिय और गर्भ से बारहवें वर्ष में वैश्य के पुत्र का यज्ञोपवीत हो जाना चाहिए। व्यासस्मृति तथा महाभारत आदि में भी ऐसी ही विधान है, परन्तु यदि उपर्युक्त समय पर यज्ञोपवीत न हो सके तो ब्राह्मण का 16, क्षत्रिय का 22 और वैश्य का 24 वर्ष से पूर्व यज्ञोपवीत हो जाना चाहिए। यदि इस समय तक भी यज्ञोपवीत-संस्कार न हो तो ये पतित हो जाते हैं।

स्त्रियां को यज्ञोपवीत का अधिकार: कुछ धर्म के ठेकेदार इस अत्यन्त पवित्र और महत्वपूर्ण संस्कार से स्त्रियों को वंचित रखना चाहते हैं, परन्तु प्राचीन ग्रन्थों के अवलोकन से पता चलता है कि प्राचीनकाल में पुरुषों की भाँति स्त्रियों को भी यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार था जैसा कि पारस्करगृ में लिखा है-**स्त्रिय उपनीता अनुपनीताश्च।** पा.गृ. सू.प. 84 सिद्धिविनायक प्रेस सं. 1936

स्त्रियाँ दो प्रकार की होती हैं-यज्ञोपवीत पहननेवाली और यज्ञोपवीतरहित। इसी प्रकार यम-संहिता में लिखा है-

पुराकल्पे तु नारीणां मौञ्जिबन्धनमिष्यते।
अध्यापनं च वेदानां सावित्रीवचनं तथा।

अर्थात् प्राचीन समय में कन्याओं का उपनयन संस्कार होता था तथा उन्हें गायत्री का जप और वेदाध्ययन करने की भी आज्ञा थी।

यज्ञोपवीत और गायत्री: यज्ञोपवीत और गायत्री का पररस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है, अत: यहाँ गायत्रीमन्त्र के सम्बन्ध में दो-चार शब्द लिखना अप्रासंगिक न होगा। गायत्रीमन्त्र यह है-**ओ३म् भूर्भवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।** यजु 36/3 हे सर्वरक्षक! सच्चिदानन्दस्वरूप, सकलजगदुत्पादक, सूर्यादि प्रकाशकों के भी प्रकाशक! आपके सर्वश्रेष्ठ पाप-नाशक तेज को हम धारण करते हैं। हे परमात्मन! आप हमारी बुद्धि और कर्मों को बुरे कर्मों से हटाकर उत्तम कार्मों में प्रेरित कीजिए। मनु महाराज गायत्री के विषय में लिखते हैं-**सावित्र्यास्तु परं नास्ति।** मनु. 2/83 गायत्री से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। वास्तव में वेद, शास्त्र, पुराण और स्मृतियाँ गायत्री की महिमा से भरे पड़े हैं। इसकी महिमा महान है। जो इसका जप और अनुष्ठान करता है, वही इसके प्रभाव को जानता है।

વેદ વિષયે આટલું તો જાણવું જ જોઈએ - 3

સત્ય ૮: "વૈદિક સંસ્કૃત" વેદ સંહિતાની ભાષા છેઃ- વેદ સંહિતાઓ વ્યવહારિક અને લૌકિક સંસ્કૃતમાં નહીં, પણ વૈદિક સંસ્કૃતમાં લખાયેલી છે. વૈદિક સંસ્કૃત આ સંસારની બધી ભાષાઓનોની જનની છે. વેદનું અધ્યયન કરવા અને તેનું સાચું અર્થઘટન કરવા માટે વૈદિક સંસ્કૃતનું યથાયોગ્ય જ્ઞાન હોવું ઘણું આવશ્યક છે.

સત્ય ૯ વેદ મંત્રોની ગોખણપટ્ટી વ્યર્થ છેઃ મંત્રોના અર્થને સમજ્યા વગર તેની ગોખણપટ્ટી કરવી વ્યર્થ છે. વેદના જ્ઞાનને મન, વચન અને કર્મમાં આત્મસાત્ કરવાથી જ વેદનો ખરો અભ્યાસ કર્યો ગણાય.

વેદનું જ્ઞાન અસીમિત છે. દરેક મંત્ર પર મંત્રના અર્થ અને મંત્રમાં છુપાયેલા જ્ઞાનના ઘણાં આવરણો હોય છે. આથી આ આવરણોને તોડી મંત્રોના અર્થમાં ઊંડા ઉતરવાની પ્રક્રિયા આજીવન નિરંતર ચાલતી રહે છે. આ આખી પ્રક્રિયા અત્યંત સુખદાયી હોય છે.

પણ આ પ્રક્રિયા સુખદાયી બને તે માટે વેદ અધ્યયનમાં તલ્લીન થઇ જવું પડે. મંત્રોની ગોખણપટ્ટી કરવાથી વેદ મંત્રોની અનુભૂતિનું સુખ મળતું નથી. ભારતમાં વેદ મંત્રોની ગોખણપટ્ટી કરનારા, વેદ પર વ્યાખ્યાન અને પ્રવચન આપનારા ઘણાં તથાકથિત વેદ વિદ્વવાનો છે. આવા વિદ્વવાનોને ભલે માન અને ખ્યાતી મળતી હોય, પણ તેમની વિદ્યા પર ખોટા અહંકારના આવરણો ચઢેલાં હોય છે આથી તેઓ પોતે જ પોતાનો આનંદ પ્રાપ્તિ અને આનંદ વૃદ્ધિનો માર્ગ અવરોધતા હોય છે.

સત્ય ૧૦: પશ્ચિમી વિદ્વાનોના વેદ ભાષ્યો વિકૃત છે. :- આધુનિક ભાષાના પ્રયોગથી વેદ મંત્રોનું સાચું અર્થઘટન કરવું શક્ય નથી. આ માટે ગહન ચિંતન, ઊંડું આત્મનિરીક્ષણ, મનની શુદ્ધતા અને યોગિક દિનચર્યા આવશ્યક છે. આમ ન થવાથી વેદ મંત્રોના અર્થનું અનર્થ જ થશે. આવું અનર્થ કરનારાઓમાં આજના સમયના માંસભક્ષી, વ્યાભિચારી, ભોગી-વિલાસી, અહંકારી અને સ્વઘોષિત વેદ વિદ્વાનોનો સૌથી મોટો ફાળો છે. મેક્સ મૂલર, વિલ્સન, ગ્રીફીથ, જ્હોન વગેરે જેવા તથાકથિત પશ્ચિમી વિદ્વાનોના વેદ ભાષ્યો એકદમ બકવાસ અને વિકૃત છે. આવા તથાકથિત વિદ્વાનોએ જ વેદના અતાર્કિક, અસહજ અને વિસંગત ભાષ્યો રચ્યાં છે. વેદનું અધ્યયન કરવા માટે આવા ભાષ્યોનો ઉપયોગ કરતા પહેલાં ચેતવું જોઈએ.

સત્ય ૧૧:- વૈદિક ઈશ્વર આકાશમાં બિરાજમાન નથી.: વૈદિક ઈશ્વર ચોથા કે સાતમાં આકાશમાં કોઈ સિંહાસન પર બિરાજમાન નથી. વેદમાં પૃથ્વી ગોળ હોવાથી અને વૈદિક ઈશ્વર સર્વવ્યાપી હોવાથી ચોથા કે સાતમાં આકાશ જેવી અતાર્કિક અને અવૈજ્ઞાનિક વાતોને વેદમાં કોઈ સ્થાન નથી.

આનાથી ઉલટું, વૈદિક ઈશ્વર દરેક જીવાત્માનો પ્રેરણાસ્ત્રોત અને શક્તિપ્રદાતા છે. વૈદિક ઈશ્વર એ સુનિશ્ચિત કરે છે કે દરેજ જીવાત્મા આ ભૌતિક જગતમાં અપરિવર્તનશીલ નિયમો અનુસાર કર્મ કરે. વૈદિક ઈશ્વર કોઈ તાનાશાહ કે ધર્મઝનૂની નથી. વૈદિક ઈશ્વર જીવાત્માની પ્રાર્થના અનુસાર તેના અપરિવર્તનશીલ નિયમોમાં ક્યારેય કોઈ ફેરફાર કરતો નથી. વૈદિક ઈશ્વર ક્યારેય કોઈ પક્ષપાત કરતો નથી. વૈદિક ઈશ્વર સર્વવ્યાપી હોવાથી તેનો કોઈ દેવદૂત નથી. વૈદિક ઈશ્વર કદી સ્વર્ગ કે નર્કનું નિર્માણ કરતો નથી. વૈદિક ઈશ્વર અવિકારી, અપરિવર્તનશીલ, અમર, અજન્મા, અને નિરાકાર છે.

હકીકતમાં, વૈદિક ઈશ્વર અલ્લાહ કે જિજસથી તદ્દન ભિન્ન છે. આ ત્રણેને એક માની બેસવું એ સૌથી મોટી ભુલ અને ભ્રાંતિનું કારણ છે.

इन्हें अजमाएं-सुबह जल्दी उठकर थोड़ा समय व्यायाम के लिए निकालें। गहरी सांस लेकर धीरे-धीरे छोड़ें। इस प्रक्रिया को कई बार करें। ❑ सुबह टहलने जाएं। ❑ मनोवैज्ञानिकों के मुताबिक कम बोलने वाले, शांत और संकोची स्वभाव के लोगों को मानसिक तनाव या डिप्रेशन होने का खतरा ज्यादा रहता है। ऐसे लोगों के लिए हंसी-मजाक अचूक दवा का काम करती है। ❑ दिनचर्या में ऐसी चीजों को शामिल करें, जिनसे आपको खुशी मिलती हो। मसलन डांस, गाना, बागवानी, टहलना, प्रार्थना, चिड़ियों को देखना, फोटोग्राफी, फिल्में देखना या तैरना। ❑ नकारात्मक चीजों से दूर रहें। जब भी आपको लगे कि तनाव आपको घेर सकता है तुंरत सोच की दिशा बदल दें। मन अस्थिर हो तो ध्यान, अध्यात्म और प्राणायाम में आपकी मदद करते हैं।

ईश्वर निराकार एवं सर्वव्यापक है

❒ मनमोहन कुमार आर्य

हम अपने शरीर व संसार को देखते हैं तो विवेक बुद्धि से यह निश्चय होता है कि यह अपौरुषेय रचनायें हैं जिन्हें ईश्वर नाम की एक सत्ता ने बनाया है। वह ईश्वर आकारवान या साकार तथा एकदेशी वा स्थान विशेष में रहने वाला कदापि नहीं हो सकता। ईश्वर सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान सिद्ध होता है। उसको सृष्टि की रचना करने तथा प्राणियों के मनुष्यादि शरीरों को बनाने सहित अन्न व वनस्पतियों आदि को बनाने का भी ज्ञान है। जब हम इस ब्रह्माण्ड की विशालता को देखते हैं तो यह सिद्ध होता है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान भी है। वह उत्पत्तिधर्मा अर्थात् जन्म-मरण के बन्धनों से सर्वथा मुक्त सत्ता है। जिसका जन्म व मरण होता है उसका कारण उस चेतन सत्ता के इच्छा व द्वेष अथवा राग-द्वेष आदि के वश में किये गये पूर्व कर्म होते हैं। यदि ईश्वर को भी ऐसा मानेंगे तो वह ईश्वर न होकर एक साधारण मनुष्य के समान हो जायेगा। संसार में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं। एक ज्ञानी व दूसरे अज्ञानी वा अल्पज्ञानी। ईश्वर को साकार व एकदेशी मानना अल्पज्ञानी मनुष्यों की कल्पना ही कही जा सकती है।

जो मनुष्य तपस्वी न हो, जिसको उच्च कोटि के ऋषि, मुनि, विद्वान व आप्तपुरुष आचार्य के रूप में प्राप्त न हों, वह मनुष्य सत्यासत्य को भली प्रकार से नहीं जान सकता। तपस्वी और योगी होने तथा श्रेष्ठ आदर्श आचार्य को प्राप्त होकर मनुष्य में विवेक ज्ञान उत्पन्न होता है जिससे वह संसार के प्रायः सभी रहस्यों को भली प्रकार से जान सकता है। आज शिक्षित व्यक्ति बहुत हैं परन्तु इन सबको विवेक ज्ञान सुलभ नहीं है। इसका कारण इनका केवल भौतिक विद्याओं का अध्ययन करना होता है। भौतिक विज्ञान से मनुष्य अभौतिक सत्ता ईश्वर व आत्मा का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। अभौतिक सत्तायें ईश्वर व जीवात्मा आदि अत्यन्त सूक्ष्म हैं जिन्हें आंखों से न तो देखा जा सकता है और न ही इन्हें शब्द, गन्ध, स्पर्श व रस इन्द्रियों के द्वारा पहचाना व जाना जा सकता है। अतः ईश्वर व आत्मा का ज्ञान व साक्षात्कार तो सिद्ध योगी, तपस्वियों व वेद के ज्ञानियों की शरण में जाकर ही हो सकता है। मध्यकाल का समय अज्ञान का समय था। इस बात का ज्ञान प्रायः सभी लोगों को है। वेद, उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति ग्रन्थ सभी को प्राप्त व सुलभ नहीं थे। इन वेदादि ग्रन्थों के सत्यार्थ भी देश देशान्तर के लोगों व आचार्यों को विदित नहीं थे। अतः वह ईश्वर व जीवात्मा के सत्यस्वरूप, जो कि अनादि व नित्य है, जान पाने में असमर्थ रहे। इस क्षेत्र में ऋषि दयानन्द को सफलता इस कारण से मिली कि वह वेदों के व्याकरण और महर्षि यास्क के निरुक्त ग्रन्थ को प्राप्त हुए। इसका उन्होंने गम्भीर अध्ययन किया और अपने योग एवं तप के बल पर वह ईश्वर व आत्मा सहित संसार के सत्य रहस्यों को जानने में सफल हुए। इसके साथ ही उन्हें वेद व समस्त वैदिक वांग्मय भी उपलब्ध हुआ जिसके सत्यार्थ भी उन्होंने अपने विद्या व योग की उपलब्धियों से साक्षात् किये। इसी कारण वह सत्योपदेश करने सहित सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय एवं ऋग्वेद-यजुर्वेद भाष्य आदि साहित्य दे सके। उनका दिया गया साहित्य सत्य की कसौटी पर पूर्णतः खरा है। सभी विद्वान अष्टाध्यायी, महाभाष्य एवं निरुक्त आदि ग्रन्थों को पढ़कर तथा सिद्ध योगी व तपस्वी बनकर ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों की सत्यता की पुष्टि कर सकते हैं। इसके लिये उनका पूर्णतः निष्पक्ष होना भी आवश्यक है। वेद ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान है। वेद ज्ञान ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को दिया था। इन ऋषियों को सर्वज्ञ, सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी ईश्वर ने एक-एक वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का ज्ञान दिया था। यह ज्ञान ईश्वर ने इन ऋषियों की आत्मा के भीतर अन्तर्यामीस्वरूप वा जीवस्थ-स्वरूप से आत्मा में प्रेरणा देकर स्थापित किया था। सभी ऋषि पवित्र व शुद्ध आत्मा थे, इसलिये वह ईश्वर द्वारा प्रेरित वेदों के ज्ञान को अपने चित्त में धारण कर सके व उसे स्मरण रख सके। इसके बाद इन ऋषियों व अन्य ऋषि ब्रह्माजी के द्वारा वेदाध्ययन, वेद प्रचार की परम्परा आरम्भ हुई जो अद्यावधि जारी है। वेद ईश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान है, इसकी पुष्टि वेदों की अन्तःसाक्षी से होती है। वेदों की कोई भी बात, तर्क, युक्ति, ज्ञान व विज्ञान के विरुद्ध नहीं है। वेदों में ईश्वर, आत्मा व सृष्टि सहित सृष्टि के सभी पदार्थों का ज्ञान है। वेदों का ज्ञान जैसा सृष्टि में है, पूरा वैसा ही उपलब्ध होता है। इससे वेद सर्वांगपूर्ण व सत्य सिद्ध होते हैं। ऐसा ग्रन्थ संसार में दूसरा कोई नहीं है। कोई मनुष्य कितना भी ज्ञानी क्यों न हो जाये, वास्तविकता यह है कि बिना वेद पढ़े कोई ज्ञानी नहीं हो सकता। वह वेद में उपलब्ध ज्ञान से अधिक बुद्धिमान व ज्ञानी तो कदापि नहीं हो सकता। ऐसा होना सर्वथा असम्भव है।

मनुष्य अल्पज्ञ अर्थात् अल्पज्ञानी होता है। उसकी रचना व ग्रन्थ कभी भी सर्वज्ञ ईश्वर व उसके ज्ञान वेद के समान नहीं हो सकते। ऐसा होना असम्भव है। अतः संसार के सभी मनुष्यों को ईश्वर व उसके ज्ञान वेद पर विश्वास करना चाहिये और मनुष्यकृत ग्रन्थों को उसी सीमा तक मानना चाहिये जिस सीमा तक वह शुद्ध वेदज्ञान के अनुकूल हों। इस नियम को अज्ञानी तथा दुराग्रही मनुष्य अपने अविद्यादि दोषों के कारण स्वीकार नहीं करते। यदि ऐसा होता तो आज पूरे विश्व में वेदमत ही प्रचलित होता और अविद्यायुक्त मतों का त्याग कर दिया गया होता। अतः ईश्वर प्रदत्त सत्यज्ञान वेदों को विश्व में सर्वत्र प्रचलित करने में कितना समय लगेगा, कहा नहीं जा सकता? यह तो ईश्वर की अपनी कृपा व प्रेरणा पर निर्भर करता है। जो भी हो, परन्तु संसार में सभी मनुष्यों के सत्यवादी व सत्याचारी न होने से वह सदाचारी व धार्मिक लोगों को पीड़ा देते रहते हैं। आज यह स्थिति शिखर पर पहुंची हुई दिखाई दे रही है जिसमें धार्मिक, सदाचारी, निष्पक्ष लोग दुःख पा रहे हैं। हमने तीन वर्ष सन् 2020 में देखा कि सभी मतों के लोग व वैज्ञानिक एक छोटे से वायरस केरोना से पीड़ित थे। ज्ञान का दम्भ भरने वाले इन सब लोगों के पास कोरोना जैसे तुच्छ वायरस और उसकी चिकित्सा वा निवृत्ति का ज्ञान नहीं था। इनसे बचाव के साधनों का ही प्रचार किया गया तथापि लोग वायरस से संक्रमित होते रहे। पूरे विश्व के धार्मिक ज्ञानी एवं वैज्ञानिकों को ईश्वर के बनाये एक केरोना वायरस ने पराजित कर दिया था। ऐसी अवस्था में भी जो ईश्वर के सत्यस्वरूप को नहीं मानता, उसे मननशील, ज्ञानी एवं सत्याचारी मनुष्य कदापि नहीं कह सकते। इस सृष्टि, मानव व मानवेतर शरीरों तथा वनस्पतियों व अन्न

(शेष पृष्ठ 15 पर)

(पृष्ठ 1 का शेष)

राज्य और उसकी भक्ति का फल मानते थे। उन्होंने ब्राह्म समाज की आलोचना में लिखा है-''इन लोगों में स्वदेशभक्ति बहुत न्यून है। ईसाइयों के बहुत से आचरण ले लिये हैं। खान-पान विवाह आदि के नियम भी बदल दिये हैं। अपने देश की प्रशंसा और पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही, उसके स्थान में भरपेट निन्दा करते हैं। व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भरपेट करते हैं।'' स्वामी दयानन्द भारतवर्ष के लिए देशभक्ति और अपने इतिहास तथा महापुरुषों की प्रतिष्ठा को बहुत महत्व देते थे। स्वदेशभक्ति का एक प्रखर-प्रमाण सत्यार्थप्रकाश के निम्न उद्धरण में मिलता है-''भला जब आर्यावर्त में उत्पन्न हुए हैं, इसी देश का अन्न-जल खाया-पिया, अब भी खाते-पीते हैं तब अपने माता-पिता, पिता-महादि के मार्ग को छोड़कर दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना ब्रह्म समाजी और प्रार्थना समाजियों का एतद् देशस्थ संस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान् प्रकाशित करना इंगलिश भाषा पढ़ के पण्डिताभिमानी होकर झटिति एकमत चलाने में प्रवृत्त होना मनुष्यों का वृद्धिकारक काम क्योंकर हो सकता है?''

स्वामी दयानन्द ने अंग्रेजों की उपनिवेशवादी नीतियों का भी खुलकर विरोध किया है। यहां तक कि अंग्रेज लेखकों ने उन्हें बागी-फकीर या विद्रोही संन्यासी की उपाधि दे डाली थी। पीछे उनकी पुस्तकों पर इलाहाबाद में जस्टिस हैरिंगटन की अदालत में अभियोग भी चला था। उन्होंने अंग्रेजों द्वारा भारतीय जनता पर लगाये गये नमक कर, जंगली उत्पाद पर चुंगी और सरकारी कागजों के मूल्य स्टैप-ड्यूटी का जमकर विरोध किया है और यह सब 1875 ई. का काम है। महात्मा गांधी ने नमक कर का विरोध 1930 ई. में किया था और स्वामी दयानन्द ने महात्मा गांधी से 55 वर्ष पूर्व नमक कर के विरुद्ध आवाज उठायी थी। वे लिखते हैं:-''एक तो यह बात है कि जो नोन (नमक) और पौनरोटी (चुंगी) में जो कर लिया जाता है, वह मुझको अच्छा नहीं मालूम देता क्योंकि नोन के बिना दरिद्र का भी निर्वाह नहीं होता, किन्तु सबको नोन की आवश्यकता होती है। वे मजूरी-मेहनत से जैसे-तैसे निर्वाह करते हैं उनके ऊपर भी यह नोन का कर दण्ड तुल्य है। पौनरोटी (चुंगी) से भी गरीब लोगों को बहुत क्लेश होता है क्योंकि गरीब लोग कहीं से घास छेदन करके ले आये वह लड़की का भार ले आये उनके ऊपर कौड़ियों के लगाने से उनको अवश्य क्लेश होगा इससे पौनरोटी (चुंगी) का जो कर स्थापना करना, सो भी हमारी समझ से अच्छा नहीं।'' वे आगे स्टैंप ड्यूटी का विरोध करते हुए लिखते हैं-''सरकार कागद (स्टैंप) को बेचती है और बहुत सा कागजों पर ध न बढ़ा दिया है। इससे गरीब लोगों को बहुत क्लेश पहुंचता है सो यह बात राजा को करनी उचित नहीं है। कचहरी में बिना धन के कुछ बात होती नहीं। इससे जो कागजों के ऊपर धन लगाना है सो भी मुझको अच्छा मालूम नहीं देता।'' इन्हीं सब बातों को देखकर भारतीय संसद के प्रथम अध्यक्ष श्री अनन्त शयनम् आयंगर ने स्वामी दयानन्द को राष्ट्रपितामह की उपाधि दी थी। श्री आयंगर जी कहते हैं-''गांधी जी अगर राष्ट्र के पिता थे तो महर्षि दयानन्द सरस्वती राष्ट्र के पितामह थे। महर्षि जी हमारी राष्ट्रीय प्रवृत्ति और स्वाधीनता आन्दोलन के आद्य प्रवर्तक थे। गांधी जी उन्हीं के पदचिह्नों पर चले। यदि महर्षि हमें मार्ग न दिखाते तो अंग्रेजी शासन में उस समय सारा पंजाब मुसलमान हो जाता और सारा बंगाल ईसाई हो जाता।''

सरदार बल्लभ भाई पटेल की दृष्टि में स्वामी दयानन्द स्वराज्य के प्रथम उद्गाता थे। वे कहते हैं-''बहुत से लोग महर्षि दयानन्द को सामाजिक और धार्मिक सुधारक कहते हैं परन्तु मेरी दृष्टि में वे सच्चे राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने सारे देश में एक भाषा, खादी, स्वदेश प्रचार, पंचायतों की स्थापना, दलितोद्धार, राष्ट्रीय और सामाजिक एकता, प्रचण्ड देशाभिमान और स्वराज्य की घोषणा यह सब बहुत पहले, सर्वप्रथम देश को दिया था।'' स्वामी दयानन्द यह समझते थे कि देश का उद्धार स्वराज्य से ही होगा और साथ ही कृषि और उद्योग की उन्नति के लिए वे बहुत प्रयत्नशील थे। उनका मानना था कि कृषि की उन्नति और पशुओं की रक्षा किये बिना सम्भव नहीं है। इसीलिए उन्होंने ''गोकृष्यादि रक्षिणी'' सभा का प्रस्ताव ही नहीं किया, वे उसके लिए प्रयत्नशील भी रहे। अंग्रेजों की नीति भारत के परम्परागत उद्योगों को मिटाने की थी। अंग्रेजी उत्पाद को बढ़ाने के लिए वे भारत के कारीगरों, बुनकरों आदि को बहुत कष्ट देते थे। स्वामी दयानन्द ने स्वदेशी का आन्दोलन तो चलाया ही साथ ही भारतीय युवकों को उद्योग-धन्धों की शिक्षा पाने के लिए जर्मनी के एक प्रिंसिपल वाइज के साथ पत्राचार कर उन्हें भेजने की व्यवस्था की। इस प्रकार कांग्रेस से 50 वर्ष पूर्व ही स्वामी दयानन्द ने स्वराज्य और स्वदेशी के लिए सक्रिय एवम् प्रचण्ड प्रयास किया था।

-कलकत्ता

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके। **वर्तमान में अच्छी गाय 75000/- रूपये के लगभग प्राप्त हो रही है।**

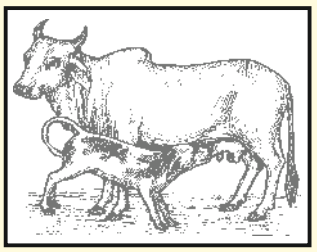

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **25,000/-** रुपये गाय की खरीद हेतु सहयोग राशि भेज रहे है। 3 सहयोगी प्राप्त होते ही गाय खरीदी जाती है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गर्म वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक:- **योगेश मुंजाल** (कार्यकारी प्रधान) **अजय सहगल** (मन्त्री)

आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी को उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय ने डी.लिट् की मानद उपाधि से विभूषित किया

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्व विद्यालय की ओर से आयोजित दसवें दीक्षांत समारोह पर आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी (कुलाधिपति, डी.ए.वी. विश्वविद्यालय, जालन्धर) प्रधान डी.ए.वी. प्रबंध कर्त्री समिति एवं प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली को डी. लिट् मानद उपाधि से अलंकृत किया गया। यह उपाधि डॉ. पूनम सूरी द्वारा राष्ट्रीय विकास में, सामाजिक सुधारों के विकास क्षेत्र में की गयी महत्त्वपूर्ण सेवाओं के लिए दी गई। उपाधि वितरण करते समय पढ़े गये पत्र में यह कहा गया किया कि डॉ. सूरी के नेतृत्व में दहेज प्रथा के उन्मूलन, भ्रूण हत्या के विरोध, भ्रष्टाचार, चरित्र निर्माण, प्राकृतिक संसाधनों के तर्कपूर्ण प्रयोग, मानवाधिकार एवं ऐसे कई मुद्दों पर प्रभावी और सफल प्रयास किए गये हैं। यह भी कहा गया कि डॉ. सूरी शिक्षा के क्षेत्र में दूरगामी कदम उठाने में एक अनन्य क्षमता रखते हैं। शिक्षा व्यवस्था को नये आयाम देने का मार्ग प्रशस्त करने के लिए डॉ. सूरी के नेतृत्व में अनेकों क्रांतिकारी कदम उठाए जा रहे हैं, जो विश्व भर में शैक्षणिक संस्थाओं के लिए एक आदर्श बनकर उभरे हैं। स्वभाव से ही विनम्र आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी ने डी. लिट् की उपाधि से किए गये इस अलकरण के लिए उत्तराखण्ड के राज्यपाल माननीय श्री गुरमीत सिंह जी और उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के उपकुलाधिपति डॉ. दिनेशचन्द्र शास्त्री का धन्यवाद करते हुए कहा कि ये सब डी.ए.वी. परिवार की निष्ठा और कर्त्तव्य-परायणता का प्रतिफल है और मैं इसका श्रेय डी.ए.वी. के प्रत्येक सदस्य को देना चाहता हूँ।

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी को डी लिट् की मानद उपाधि से अलंकृत करते हुए राज्यपाल माननीय श्री गुरमीत सिंह जी एवं उपकुलाधिपति डॉ. दिनेश चन्द्र शास्त्री जी

(पृष्ठ 13 का शेष)

आदि पदार्थों को देखकर ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध होता है। हम यह भी जानते हैं कि अभाव से भाव व भाव से अभाव की उत्पत्ति नहीं होती। अत: ईश्वर व जीवात्मा एक अनादि व नित्य तथा कभी अभाव व नाश को प्राप्त न होने वाली सत्तायें सिद्ध होती हैं। ईश्वर है तो उसका निश्चित स्वरूप भी है ही। वह साकार है व निराकार? ईश्वर साकार नहीं हो सकता, इसका कारण यह है कि साकार वस्तु सीमित होती है। ईश्वर का यह विशाल ब्रह्माण्ड उसे निराकार व सर्वव्यापक सिद्ध करता है। रचना व क्रिया उसी देश व स्थान विशेष पर होती है जहां क्रिया करने वाली सत्ता विद्यमान हो। ईश्वर की क्रियायें पूरे ब्रह्माण्ड में दृष्टिगोचर होती हैं अत: वह सर्वव्यापक व सर्वदेशी सिद्ध होता है। निमित्त कारण साकार सत्ता से सृष्टि व शरीरों के परमाणु व अणु नहीं बन सकते। साकार को बनाने वाला पूर्णत: साकार नहीं हो सकता। ईश्वर मां के गर्भ में भी रचना करता है। अत: उसका गर्भ के अन्दर व बाहर दोनों स्थानों में होना आवश्यक है। जबकि साकार वस्तु बाहर से ही रचना कर सकती है। सर्वव्यापक व निराकार ईश्वर ही संसार की सभी वस्तुओं के अन्दर व बाहर दोनों स्थानों पर होता है। अत: ईश्वर सदा, सर्वदा, हर स्थिति में निराकार ही होता है। वेदों में भी उसे निराकार बताया गया है। सर्वव्यापक वस्तु कभी भी साकार नहीं हो सकती। ऋषि दयानन्द ने ईश्वर के साकार व निराकार होने या न होने की अपने विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में समीक्षा की है। वहां यह सिद्ध किया गया है कि ईश्वर निराकार ही होता है। अत: ईश्वर को साकार मानने वालों को निष्पक्ष बुद्धि से निर्णय करना चाहिये। ईश्वर निराकार व सर्वव्यापक होने से पूरे ब्रह्माण्ड में व्यापक है। अत: वह एकदेशी व किसी स्थान विशेष पर रहने वाला नहीं हो सकता। वह सभी मानवों के शरीर में भीतर व बाहर विद्यमान होता है। वह निराकार स्वरूप से ही सृष्टि को बनाता, पालन करता व प्रलयकर्ता है। अत: किसी दुष्ट व पापी को मारना तथा अन्य किसी भी कार्य को करने के लिये उसे जन्म लेने व एकदेशी होने की आवश्यकता नहीं है। सर्वव्यापक होने से वह कहीं न तो जाता है और न कहीं आता है। वह पृथिवी पर भी है, आकाश में भी, सागर में भी और पहले दूसरे से लेकर हजारवें व करोड़वे आसमान पर भी है। अत: उसे किसी एक स्थान पर मानना और उसका पता न बताना व उससे संवाद आदि न करना कराना उसके एकदेशी होने को असत्य सिद्ध करते हैं। ईश्वर को सर्वव्यापक व सर्वदेशी मानने से सृष्टि के सभी रहस्य सुलझ जाते हैं। यह मान्यता ज्ञान व विज्ञान से भी पोषित है। अत: ईश्वर सर्वव्यापक होने से सभी स्थानों में है। मनुष्यों की तरह से उसका अपना शरीर नहीं है। वह घट-घट का वासी है। ईश्वर का प्रत्यक्ष व साक्षात्कार कोई भी योगी अपनी आत्मा में कर सकता है। ईश्वर का साक्षात्कार करना ही मनुष्य जीवन का उद्देश्य होता है। योग का उद्देश्य ही चित्त की वृत्तियों को नियंत्रित कर ईश्वर का साक्षात्कार करना होता है। न केवल महर्षि दयानन्द अपितु उनसे पूर्व सहस्रों ऋषियों व योगियों ने ईश्वर का साक्षात्कार किया है। यह साक्षात्कार पृथिवी पर रहकर ही होता है। अत: ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वदेशी, सर्वत्र विद्यमान होना सिद्ध होता है। ऐसा ही सब मत-मतान्तरों व धार्मिक मनुष्यों को मानना चाहिये। इसी में सबका कल्याण है और इसके विपरीत मानने में लाभ किंचित नहीं अपितु हानि है।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोन: 9412985121

Everybody says
"Mistake is the first step of success"
but the real fact is
"Correction of mistake is the
first step of success"

टंकारा समाचार अगस्त 2023

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2021-22-23

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 231/2023

Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-06 on 1/2-08-2023

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.07.2023

सफलता के 6 मूल मंत्र

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक–अजय सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय